बढ़ती जनसंख्या-बढ़ते खतरे-पर्यावरण प्रदूषण

* डॉ. प्रमोद भारतीय

प्रकृति ही मानव का पर्यावरण और यही उसके संसाधनों का भण्डार है। आज का मानव प्रकृति की गोद में पलकर अज्ञानता वश अपनी विज्ञान यांत्रिकी जानकारी से पर्यावरणीय संसाधनों के अतिशय दोहन में लिप्त है । पिछले 25 वर्षो से पारिस्थितिकी विदों ने समझने और समझाने का अथक प्रयास किया है कि काल स्थान की सीमाओं में हमारे संसाधन असीमित नहीं है । अति उपभोगी सभ्यता में औद्योगिक उत्पादन प्राकृतिक संसाधानों और ऊर्जा स्त्रोत भण्डारों पर आधारित है जो दोनो निश्चय ही त्वरित गति से क्षीण हो रहे है । इस प्रक्रिया में संसाधनों द्वारा ही निर्मित जीवपोशी तन्त्र संकीर्ण, दूषित और विषाक्त होता जा रहे है । विज्ञान ने हमें दो विकल्पों के चौराहे पर खड़ा कर दिया है । एक तो विवेक, मितव्यय और नैतिकता का लम्बा रास्ता, दूसरा भोग विलास का जिस पर पर्यावरण तथा मानव जाति का शीघ्र ही सर्वनाश निश्चित है ।पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है हमारे चारों ओर छाया आवरण (परि+आवरण = पर्यावरण) जीवन और पर्यावरण में अटूट सम्बन्ध है । प्रकृति में जल, वायु भूमि पेड़–पौधों, जीव–जन्तु आदि में एक संतुलन कायम है । यह संतुलन ही प्राणी के अस्तित्व का आधार है । **बेबस्टर शब्द कोश के अनुसार** – ''पर्यावरण से अभिप्राय उन घेरे रहने वाली पारिस्थितियों, प्रभावों एवं शक्तियों से है जो प्राकृतिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक दशाओं के समूह द्वारा व्यक्ति अथवा समुदाय के जीवन को प्रभावित करता है ।''

प्राकृतिक संसाधनों के बाद आर्थिक पर्यावरण को प्रभावित करने वाला दूसरा महत्वपूर्ण घटक मानव संसाधन है । जनसंख्या आर्थिक गतिविधियों का साधन और साध्य दोनो होती है । जनसंख्या में गुणात्मक वृद्धि का आर्थिक पर्यावरण पर अनुकूल तथा संख्यात्मक वृद्धि का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है । भारत में मानव संसाधन आर्थिक विकास में अवरोध सिद्ध हुआ है । यद्यपि जनाधिक्य के कारण भारत दुनिया के बड़े बाजार के रूप में उभरा है । सस्ती श्रम शक्ति के कारण विदेशी निवेशकों का आकर्षण बढ़ रहा है, किन्तु जनसंख्या की बहुलता से अनेक समस्याए यथा गरीबी बेरोजगारी पिछड़ापन मुखर हो गई है । आर्थिक प्रगति जनसंख्या रूपी बाढ़ में बह जाती है।

''आज भारत की स्थिति उस पिता की भांति हो गई है जिसके पास आवास और सुविधाओं का अभाव है, और बहुत सारे मेंहमान आ गए है और ऐसी स्थिति में वह किंकर्तव्यविमूढ़'' की स्थिति में आ जाता है । भारत में बढ़ती जनसंख्या के सम्बन्धा में एक पंक्ति का उल्लेख किया जाना समीचीन है – **''परवरिश नहीं हम कर पाए फूलों की, । घर में फुलवारी लगाना गलती है ।''**

पर्यावरण–प्रदूषण से तात्पर्य वातावरण के भौतिक, रसायनिक, जैविक अवस्था में ऐसा परिवर्तन जिससे मानव जानवर वनस्पति अथवा नैसर्गिक प्रतीकों को हानि पहुॅचे । प्रदूषण का अर्थ होगा मानव अभिप्रेरित ऐसे परिवर्तन जिनसे प्राकृतिक वातावरण की गुणवत्ता का ह्रास हो । जीव या प्राणियों के लिए अनिष्ट कारक कतिपय बाह्य पदार्थो के पर्यावरण में समावेश को प्रदूषण कहते है ।

शोध का उद्देश्य – अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है कि मनुष्य जो प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहा है, उसके भयानक परिणाम से वह अनभिज्ञ है । उसे यह जान लेना चाहिये वह स्वयं ही युद्ध की विभिषिका को आमंत्रित कर रहा है । निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर खोजना ही इस शोध पत्र का उद्वेश्य है –01. क्या पृथ्वी के आकार से जनसंख्या अधिक हो जायेगी ? 02. क्या प्राकृतिक स्त्रोत लुप्त प्राय हो जायेगे? 03. क्या प्रकृति निवास लुप्त व असंतुलित हो जायेगें ? 04. क्या मानव जाति भुखमरी का सामना करेगी? 05.क्या गाँववासी शहरों की ओर निरन्तर पलायन करेगें?

शोध–प्रविधि – इस शोध पत्र में द्वितीयक समंकों के माध्यम से बढ़ती हुई जनसंख्या के विस्फोटक परिणाम निकालने तथा पर्यावरण विदों के चिन्ताजनक प्रश्नों को सामने लाकर उत्तर ढूंढने की कोशिश की गई है । भारत में बढ़ता हुआ जनंसख्या का घनत्व तथा विश्व जनसंख्या की दृष्टि से भारत के स्थान को निर्धारित करना ही इसका मुख्य लक्ष्य है ।

वर्तमान में आर्थिक विकास के फलस्वरूप औद्योगीकरण, नगरीकरण, वनों का विनाश एवं प्राकृतिक संसाधनों का अन्धाधुन्ध दोहन हो रहा है । इसके फलस्वरूप मानव एंव प्रकृति के मध्य स्थापित संतुलन बिगड़ गया है । आधुनिकता, विकास एवं सभ्यता की अंधी दौड़ में दौड़ रहे वर्तमान सभ्य समाज ने कुछ ऐसे कार्य किये है जो मानव की नजर में विकास का प्रतीक है, परन्तु इसके लिए गये निर्णय आत्मघाती सिद्ध हुए है, जो पर्यावरण गुणवत्ता के ह्रास के प्रमुख कारण है । सभी पर्यावरणीय समस्याओं का सूक्ष्म अध्ययन करें तो इनमें केन्द्रीय समस्या जनसंख्या वृद्धि की ही है, जिससे अनेक समस्याएँ जन्म लेती है, जैसे – बेरोजगारी, अशिक्षा, खाद्यान्न की कमी, गरीबी, ऋण, मंहगाई, असमान वितरण, क्रय शक्ति की कमी, बाल श्रम को बढ़ावा, चिकित्सा सुविधा का अभाव एवं बीमारी का आधिक्य, पौष्टिक भोजन का अभाव आदि । पर्यावरण और जनसंख्या का प्रत्यक्ष सम्बंध है।

अमेंरिका जनंसख्या ब्यूरो के इन्टरनेशनल प्रोग्राम सेन्टर की एक रिपोर्ट ने जनसंख्या वृद्धि की तीव्रता को देखते हुए अक्टूबर 2012 तक 7 अरब होने की घोषणा की है । भारत के संदर्भ में वर्ष 2030 तक चीन को पीछे छोड़कर भातर विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश बन जाएगा ।

हम प्रकृति की संतान है स्वामी नहीं – ''मानव सभ्य हो या बर्बर, प्रकृति की संतान है उसका स्वामी नहीं । यदि उसे अपने पर्यावरण पर प्रभुत्व बनाए रखना है तो उसके लिए कतिपय

*सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) शा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नरसिंहगढ़ जिला राजगढ़ म.प्र.

प्राकृतिक नियमों के अनुसार चलना आवश्यक है । वह जब प्रकृति के नियमों का उल्लघंन करता है तभी वह उस प्राकृतिक पर्यावरण को नष्ट कर बैठता है जिस पर उसका अपना जीवन निर्भर है और जब उसका पर्यावरण तेजी से बिगड़ने लगता है, तब उसकी सभ्यता का पतन भी होने लगता है।''

किसी ने यह कहकर इतिहास की संक्षिप्त रूपरेखा बताई है कि – ''सभ्य मानव पृथ्वी के एक छोर से चलकर दूसरे छोर पर पहुॅच गया है और वह जहॉ से भी गुजरा है वहीं भूमि मरूस्थल हो गई है''।

पर्यावरण और सभ्यता – प्रो.ई.एफ. शुमाखर ने ठीक ही कहा है –'' अपनी वैज्ञानिक व तकनीकी शक्ति के मुखरित होने के उत्साह में आधुनिक मानव ने उत्पादन की ऐसी प्रणाली का निर्माण कर लिया है जो प्रकृति के साथ अनाचार करती है और ऐसे समाज की रचना कर ली है जो मनुष्य को विकृत करती है।''

गॉधीजी की दृष्टि में – ''यह धरती अपने प्रत्येक निवासी की आवश्यकता को पूरा करने के लिए यथेष्ट साधन उपलब्ध करती है, लेकिन हर व्यक्ति के लालच की पूर्ति नहीं कर सकती।''पर्यावरण का मानव प्रभाव के सम्बंध में **स्व. श्रीमती इंदिरा गॉधी** ने कहा था –''आधुनिक युद्ध जैसी बेतुकी बात और कोई नहीं हो सकती । भयंकर हथियार जितनी शीघ्रता से विनाश करते है, उतनी शीघ्रता से और कोई हथियार कार्य नहीं करता क्योंकि ये भयंकर हथियार न केवल मारते है, बल्कि जीवित अजन्में शिशुओं को भी जीवित रहते हुए मार देते है, विकृत और अपंग कर देते है यह भूमि को विषाक्त कर देते है। कुरूपता, अनउर्वरता, बंजरता का लम्बा सिलसिला अपने पीछे स्थायी तौर पर छोड़ देते है।''

मानव स्वास्थ्य एवं पर्यावरण–मानव का स्वास्थ्य स्वच्छ एवं संतुलित पर्यावरण पर निर्भर है । विगत शताब्दी में मानवीय गतिविधियों के पर्यावरण पर तीव्रता से प्रहार के कारण पर्यावरण असंतुलित हो गया है । भूमि संसाधन, वन संसाधन, जल संसाधान कोयला एवं पेट्रोलियम का युद्ध स्तर पर दोहन करने से एक ओर इनकी धटती मात्रा द्वारा पर्यावरण संतुलन बिगड़ गया और दूसरी ओर इनसे पर्यावरणीय गुणवत्ता में ह्रास हुआ है जिस पर प्रत्यक्षतः मानव स्वास्थ्य निर्भर है । इस प्रकार मानव जीवन पूर्णता पर्यावरणीय तन्त्र से सम्बद्ध है ।

पर्यावरण एवं मानव अधिकार – अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के प्रधान **न्यायमूर्ति डॉ. नगेन्द्र सिंह** का मत है– ''सुरक्षित एवं पर्याप्त वातावरण में शांतिपूर्ण ढंग से मानव को रहने का अधिकार है जो उसके मूलभूत अस्तित्व से सम्बंधित है । ऐसी स्थिति में जो मानव के अपने अस्तित्व का मूलभूत कारण है, उसे निःसंदेह मौलिक अधिकार की श्रेणी में रखा जाना चाहिये या मौलिक अधिकार का नाम दिया जाना चाहिये। '' 1

औद्योगिक संस्कृति और बढ़ती आबादी – प्रो. गुन्नार मिर्डल ठीक ही कहते है कि – ''पश्चिमी राष्ट्र अपव्यय–प्रदूषण और धरती के संसाधनों के अन्धाधुन्ध दोहन की भयानक कीमत पर ही अपने जीवन यापन का स्तर ऊॅंचा बनाऐं रख पा रहे है। जनसंख्या वृद्धि कर विस्फोटक स्थिति पारिस्थितिकी संतुलन के लिए एक चुनौती है । विश्व की जनसंख्या इस शताब्दी के अन्त तक लगभग दुगुनी होने की संभावना है।

जनसंख्या राष्ट्र के लिए संपत्ति और दायित्व है ।

प्रो. हिपल के अनुसार – ''एक राष्ट्र की वास्तविक सम्पत्ति उसकी भूमि, जल, वनों, खानों, पशु, संपत्ति या डालरों में निहित न होकर उस राष्ट्र के धनी और प्रसन्न जन समुदाय में निहित होती है।''

शहरीकरण एवं पर्यावरण – संयुक्त राष्ट्रसंघ के द्वारा प्रकाशित दुनिया के 200 शहरों के अध्ययन पर आधारित शहरीकरण की ''वैश्विक चुनोतियॉ'' नामक रिपोर्ट में विकासशील देशों में विस्फोटक गति से हो रहे शहरीकरण पर चिन्ता प्रकट की गई है। इस रिपोर्ट के अनुसार आगामी दो दशकों में 95 प्रतिशत शहरीकरण विकासशील देशों में होगा । विशेषज्ञों का अनुमान है कि वर्ष 2025 तक देश की लगभग आधी जनसंख्या शहरी होगी। इस परिदृश्य में भारत में जैसे अधिक तथा तेजी से बढ़ती जनसंख्या वाली देशों के लिए इसका प्रबंधन अत्यावश्यक है, क्योकि शहरीकरण अपने साथ कई समस्याऍ लाता है, जैसे–जैसे गॉवों की आबादी शहरों की ओर पलायन कर रही है वैसे–वैसे शहरों में पर्यावरण भी अधिक प्रदूषित हो रहा है। तीव्र जनसंख्या वृद्धि भारतीय अर्थव्यवस्था का लक्षण रही है । वर्ष 2001 की जनंसख्या के ऑकड़े प्रदर्षित करते है कि विगत दशक में भारत जनसंख्या वृद्धि दर 21.32 प्रतिशत रही ।

तालिका क्र. 1

भारत में शहरों की संख्या एवं वृद्धि दर

वर्ष	भारत में शहरों की संख्या	वृद्धि दर 1951 की तुलना में
1951	2843	–
1961	2365	–16.8
1971	2590	–8.9
1981	3378	+18.8
1991	3768	+32.5
2001	5161	+81.5

स्त्रोत – Statistical outline of India 2004-05 Tata Servicesa Limited Mumbai- 2005

तालिका क्र. 1.1

भारत में शहरों की जनसंख्य (प्रतिशत)

वर्ष		शहरी जनसंख्या
1951	–	17.03
1961	–	18.00
1971	–	20.02
1981	–	23.03
1991	–	25.07
2001	–	27.08

स्त्रोत – Statistical outline of India 2004-05 Tata Servicesa Limited Mumbai-2005

जनसंख्या वृद्धि एवं ध्वनि प्रदूषण –बढ़ती हुई जनसंख्या से वाहनों की मात्रा में दिन प्रतिदिन वृद्धि हो रही है, जिससे वायु प्रदूषण तो बड़ा ही है, किन्तु शहरों में बढ़ती हुई जनसंख्या एवं वाहनों की वृद्धि के कारण ध्वनि प्रदूषण भी तीव्र गति से बढ़ा है। इस कारण शहरों में मानसिक तनाव, चिड़चिड़ापन, बेचेनी, कार्य में नीरसता, श्वास सम्बंधी बिमारियॅा तथा श्रवण शक्ति में कमी जैसे रोगो में वृद्धि हो रही है। यह एक स्थापित तथ्य है कि शहरीकरण एवं पर्यावरण की गुणवत्ता दोनों में ऋणात्मक

सहसम्बंध है, यद्यपि बढ़ता हुआ शहरीकरण विकास का द्योतक है, परन्तु साथ ही इसने अनेक पर्यावरणीय चुनोतियॉ उत्पन्न कर दी है, यह निम्नानुसार है –

01. जनसंख्या वृद्धि से संसाधनों का अत्यधिक दोहन होता है, जिससे उनकी कमी हो रही है। शहरों में पेयजल की कमी इसका ज्वलन्त उदाहरण है । 02. बड़ी हुई जनसंख्या से शहरों में गंदगी फैल रही है, जो कचरा प्रबंधन के रूप में एक बड़ी समस्या है जो पर्यावरण प्रदूषण के लिए उत्तरदायी है । ठोस अपशिष्ठ पदार्थ और द्रवीय कचरे से न केवल सतहही जल, वरण भू–जल भी प्रभावित होने लगा है । 03. शहरी जनसंख्या वृद्धि के कारण ऊर्जा संसाधनों पर दबाव बड़ा है। वर्तमान में इसका असर सिर्फ ग्रामीण क्षेत्रो में विशेषकर कृषि पर ही नहीं, बल्कि शहरी और औद्योगिक शहरो पर भी होता है । 04. बढते हुए शहरीकरण के कारण वनाच्छादित क्षेत्र कम होता जा रहा है, यह पर्यावरण प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण है । शहरों के कूड़े करकट एवं प्लास्टिक की वस्तु के कारण भूमि प्रदूषण बड़ा है । इन दोनों कारणों से भूमि का तापमान बड़ा है और मौसम चक्र में परिवर्तन हुआ है । यह प्राकृतिक असंतुलन सहित कई समस्याओं को जन्म दे रहा है । 05. बढ़ती जनसंख्या ने खाद्यान्नों की मांग में वृद्धि कर दी है, अतः कृषि उत्पादन बढाने हेतु रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का प्रयोग अंधाधुन्ध गति से किया जा रहा है । वर्षा जल के माध्यम से यह न केवल सतही जल, वरन भू–जल की गुणवत्ता को भी प्रभावित कर रहा है । 06. बढ़ता हुआ औद्योगिकरण, बढ़ते हुए शहरीकरण के कारण और परिणाम दोनो है । उद्योगो से निकला हुआ धुँआ पृथ्वी के असंतुलन का कारण है, जिससे सम्पूर्ण मानव जगत का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है । 07. शहरीकरण ने जहॉ भौतिक और आर्थिक पर्यावरण प्रदूषित किया है, वही सांस्कृतिक पर्यावरण भी इससे अछूता नहीं रहा है, इससे नैतिक तथा पारिवारिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास हुआ है। प्रगतिशीलता के नाम पर विदेशी संस्कृति अपनाई जा रही है। शहरों में आपराधिक घटनाओं में वृद्धि हुई है, शहरी चकाचौध में सांस्कृतिक पर्यावरण को बुरी तरह प्रदूषित किया है ।

औद्योगिक संस्कृति और बढ़ती आबादी – प्रो. गुन्नार मिर्डल ठीक ही कहते है कि– ''पश्चिमी राष्ट्र अपव्यय–प्रदूषण और धरती के संसाधनों के अन्धाधुन्ध दोहन की भयानक कीमत पर ही अपने जीवन यापन का स्तर ऊँचा बनाऐं रख पा रहे है। जनसंख्या वृद्धि कर विस्फोटक स्थिति पारिस्थितिकी संतुलन के लिए एक चुनौती है । विश्व की जनसंख्या इस शताब्दी के अन्त तक लगभग दुगुनी होने की संभावना है। जनसंख्या राष्ट्र के लिए संपत्ति और दायित्व है।

प्रो. हिपल के अनुसार – ''एक राष्ट्र की वास्तविक सम्पत्ति उसकी भूमि, जल, वनों, खानों, पशु, संपत्ति या डालरों में निहित न होकर उस राष्ट्र के धनी और प्रसन्न जन समुदाय में निहित होती है। ''

तालिका क्र 1 : 2 तालिका क्रमांक 1 : 4

ध्वनि प्रदूषण (ग्रामीण, नगरीय एवं औद्योगिक क्षेत्र)

क्र.	अवस्थिति ध्वनि स्तर	ध्वनि स्तर (डेसिबल)		अवस्थिति (डेसिबल)
01	ग्रामीण स्तर	25–30	रेडियो, टेलीविजन, स्टूडियो	25–35
02	उपनगरीय क्षेत्र	35–40	सगीत कक्ष	30–35
03	नगरीय आवास क्षेत्र	35–40	अस्पताल, अध्ययन–अध्यापन कक्ष होटल, संगोष्ठी कक्ष	35–40
04	नगरों में आवासीय एवं व्यापारिक क्षेत्र	40–45	कचहरी कक्ष, निजी कार्या. पुस्तकालय	40–45
05	नगर क्षेत्र	40–45	बड़े सरकारी कार्यालय तथा बैंक	50–55
06	औद्योगिक क्षेत्र	50–60	स्टोर तथा भोजनालय	50–55

विश्व में जनसंख्या वृद्धि

वर्ष	जनसंख्या (करोड़ो में)
1850 ई.	100 करोड़
1930 ई.	200 करोड़
1962 ई.	300 करोड़
1975 ई.	406 करोड़
1987 ई. (11.7.1987)	500 करोड़
1999 ई. (12.10.1999)	600 करोड़
2001 ई.	613.7 करोड़
2015 ई.	720.7 करोड़
2025 ई.	781.8 करोड़
2300 ई.	900 करोड़

Source - World development report 2002 population reference Bureau U.S.A. 2001-P-2004

तालिका क्र. 1:3

शोर की अधिक आवृत्ति का स्वास्थ्य पर प्रभाव

शोर की आवृत्ति	स्वास्थ्य पर प्रभाव
80	चिड़चिड़ापन
90	श्रवण शक्ति समाप्त
110	चमड़ी पर उद्दीपन व सरसराहट
130–135	उल्टी, स्पर्श अनुभव में कमी
150	चमड़ी पर जलन
160	संवेदनशील झिल्लियों का फटना

भारत में संसार का 2.4 प्रतिशत क्षेत्रफल पाया जाता है । इस पर कुल जनसंख्या का 16.7 प्रतिशत भाग निवास करता है ।

भारत में सन् 1991 से 2001 तक जनसंख्या लगभग 18.1 करोड़ तब बढ़ी जो कनाडा, फ्रांस व जर्मनी की कुल जनसंख्या के समतुल्य है। इस शताब्दी में विश्व की जनसंख्या 1.6 अरब थी जो सन् 1960 में बढ़कर 3 अरब हो गई । सन् 1987 तक यह बढ़कर 5 अरब हुई । आज संसार की कुल जनसंख्या 6867 अरब है। एक अनुमान के अनुसार सन् 2025 तक जनसंख्या बढ़कर 7,810 अरब हो जाएगी तथा सन् 2050 तक यह जनसंख्या 9.039 अरब तक पहुँच जाएगी। ''11 मई 2000 को भारत की जनसंख्या 1 अरब तक पहुँच गई। सन् 2050 तक भारत दुनिया का जनसंख्या के आधार पर सबसे विख्यात देश होगा।'' पर्यावरण के आधार पर पृथ्वी एक निश्चित सीमा तक ही भार सहन कर सकती है। जनसंख्या वृद्धि से पृथ्वी पर भी भार बढ़ रहा है ऐसा माना जाता है पृथ्वी 15 अरब जरसंख्या समूह तक का भार सहन कर सकती है।

भारत के पर्यावरण विज्ञान के जनक प्रो. रामदेव मिश्र –लोग परिस्थितिकी विदों से पूछते है कि क्या हम स्वच्छ और अच्छे जीवन के लिये पाषाण युग में चले जाऐ। क्या विज्ञान, तकनीकी तथा सामाजिक विकास को हम तिलॉजली दे दें । समाधान पीछे जाने में नहीं है। हमें पर्यावरण की रक्षा करनी है। स्वस्थ पर्यावरण ही विकास है, फिर वह जैसे भी हो। उर्जा प्रवाह और पदार्थो का संचरण, प्राकृतिक परितंत्रों के अनुसार सामाजिक सेवा में

जनसंख्या नियंत्रण एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु सुझाव – 01. परिवार कल्याण कार्यक्रम का प्रचार–प्रसार कर उसे लोकप्रिय बनाना । 02.मातृ दर में कमी लाना तथा महिला शिक्षा पर बल देना। 03.अधिक जनसंख्या वाले राज्यों में क्षेत्रीय जनसंख्या नीति का अलग–अलग निर्धारण करना। 04. जनसंख्या वृद्धि के खतरों से समाज को अवगत कराना। 05.अधिक उम्र में विवाह करने हेतु कानून बनाना। 06.चीन की भॉति एक बच्चे वाले परिवार को सरकारी सहायता प्रदान करने हेतु कानून बनाना । 07. पर्यावरण शिक्षा का प्रचार–प्रसार कर जनमानस को जागृत करना। 08.प्रदूषण से होने वाली बीमारियॉ एवं उसके दुष्प्रभाव से जनमानस को अवगत कराना। 09.जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण से बचाव के सुरक्षा उपकरणों के प्रयोग की सलाह देना । 10. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था पर विशेष ध्यान देना। 11. उद्योगो से निकलने वाले प्रदूषणकारी अवशिष्टों का समुचित उपचार एवं समापन करवाना। 12. जंगलों की कटाई से होने वाली हानि से मानव को अवगत कराना तथा पर्यावरण संरक्षण के दायित्व का निर्वाह करने हेतु जनमानस को तैयार करना।

प्रख्यात गॉधीवादी वैज्ञानिक डॉ. आत्माराम ने कहा – ''जिन्दगी में रहन–सहन में सादगी आए तो फिजूल की चीजें बनाने वाले कारखाने कम होगें और उनसे पैदा होने वाला प्रदूषण भी कम होगा। मुट्ठी भर लोगा को सकल ऐश्वर्य उपलब्ध कराने की बजाय सबको रोटी, कपड़ा, मकान और पीने का पानी दिलवाना हमारा लक्ष्य हो तो हम प्रकृति को कम से कम पीड़ित करते हुए प्रगति कर सकेगे।

हेलमुट कोल के अनुसार – ''आज अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय भूमण्डलीय पर्यावरणिक संरक्षण के क्षेत्र में मूलतः बढ़ते हुए सहयोग के प्रति केन्द्रीय चुनौती से पूर्णतः सजग है पृथ्वी के वायुमण्डल में परिवर्तन जिसका कुप्रभाव जलवायु पर भी पड़ता है उष्ण कटिबन्धीय वर्षा का निरन्तर क्षय ओजोन परत का विध्वंश और विभिन्न जातियों का लोप ये सब प्रकृति और महाद्वीपों में मानव जाति के लिए खतरा पैदा करते है। पर्यावरण संरक्षण के सन्दर्भ में 1989 में टोरन्टो सम्मेंलन को संबोधित करते हुए वहॉ के **प्रधानमंत्री** ने कहा था – '' हम प्रकृति के साथ बहुत खतरनाक खेल खेल चुके है। अब समय आ गया है कि हम अपनी मानसिकता में परिवर्तन लाए। 1996 के विश्व विज्ञान प्रतिवेदन में विश्व को चेतावनी देते हुए लिखा गया था कि – '' आर्थिक संसाधनों एवं वर्तमान में वस्तुओं से भरपूर बाजारों की पृष्ठभूमि में विकसित राष्ट्रो को अपनी वैज्ञानिक एवं प्रोद्योगिकी की प्राथमिकताओं में परिवर्तन लाना होगा'' ।

प्रदूषण के प्रति विश्व चेतना– विश्व के विशेषज्ञों ने बड़ी चेतावनी दी है कि–'' यदि प्रदूषण इसी तरह बढने दिया तो एक अवस्था ऐसी आयेगी जब ताजी हवा और शुद्ध जल मिलना मुश्किल हो जावेगा । वातावरण में विषैले पदार्थ जमा होते जायेगे तो नये रोग पनपते जायेगे और मानव जाति खतरनाक मोड़ पर पहुँच जाएगी''। अनुसंधानो से यह भी पता चला है कि –''पर्यावरण में शोर की तीव्रता दस वर्षो में दोगुनी होती जा रही है । हमारे देश के महानगरो में पिछले बीस वर्षो में दस गुना शोर बड़ा है। कलकत्ता, मुम्बई और दिल्ली तो सर्वाधिक शोरगुल वाले महानगरों की श्रेणी में आते है । अतः आज के युग में शोर का चक्रव्यूह हमें चारों ओर से घेरता जा रहा है।'' जीवन का हर क्षेत्र शोर से घिर सा गया है, जिस तरह से यह शोर प्रदूषण उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है उससे ऐसा लगता है कि आने वाले समय में यह इतना विकराल रूप धारण कर लेगा कि मानव जीवन का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है । अगले पचास सौ वर्षो में अंतरिक्ष में वायुयान इतने उड़ेगे कि 20–30 हजार फुट की उँचाई तक का वातावरण विषाक्त हो जाएगा। प्रदूषण को दूर करने के साधन तो सोचने ही चाहिए पर इससे भी अधिक आवश्यक है कि जिन विधियों के उपयोग से प्रदूषण उत्पन्न होते हो, उन्हे ही मूलतः समाप्त किया जाय इसलिए अब हमें सभ्यता और संस्कृति के विकास को कोई नया रूप देना होगा। हमने स्वयं प्रदूषण नामक महादानव को जन्म दिया और यह दानव हमें ही त्रस्त करने की बाट जोह रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची एवं पत्रिकाऍं –

अन्तर्राष्ट्रीय विधि के सिद्धान्त के रूप में एवं सतत विकास का अधिकार–जर्नल ऑफ इण्डियन लॉ इन्स्टीट्यूट खण्ड 29 (1987) पेज – 290

1. दी इकोनॉमिक टाइम्स,नई दिल्ली –20 जून 1999 2. इण्डियन इकोनॉमिक सर्वे – 1989–99 एस–12 3. राजस्थान पत्रिका – 7 जुलाई 1999 4. Statesaticcal outline of India 2004-05 Tata Serivicesa Limited Mumbai- 2005 5. पर्यावरण विकास–CEPRD के विभिन्न अंक 6. इण्डियन इकोनॉमिक सर्वे –1998–99 7. राजस्थान पत्रिका –9 जुलाई 1999 8. गोपीनाथ श्रीवास्तव –पर्यावरण प्रदूषण 9. शुकदेव प्रसाद – पर्यावरण और हम 10. प्रेमानन्द चन्दोला – पर्यावरण और जीव 11.प्रो. धनन्जय वर्मा –पर्यावरण चेतना 12. डॉ. एस.एस. पुरोहित डॉ. पी.पी. देव –पर्यावरण अध्ययन डॉ. अशोक के. अग्रवाल 13. डॉ. रामकुमार गुर्जर पर्यावरण अध्ययन डॉ. बी.सी. जाट 14.डॉ. ओ.पी. शर्मा–भारत में आर्थिक पर्यावरण 15. डॉ. एच.एस. शर्मा–पर्यावरण शिक्षा 16. डॉ. आर.डी. गुप्ता डॉ. के.वी. सिंह 17. श्याम सुन्दर शर्मा –सागर प्रदूषण 18.प्रो. गुप्ता, प्रो.कावड़िया, प्रो.अत्तारी–विकास एवं पर्यावरण का अर्थशास्त्र